बी. एम. ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (एल.एन.एम.यू.)

स्नातक (प्रथम खण्ड) पेपर-II | डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश | दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक 21-07-2020

सत्याग्रही बनने के लिए आवश्यक गुण :

गाँधीजी के अनुसार एक सत्याग्रही में निम्नलिखित गुण होने चाहिए -

1. सत्याग्रही पूर्णतया ईमानदार एवं अपने संकल्प के प्रति पूर्ण निष्ठावान हो।
2. सत्याग्रही को खुले मन का होना आवश्यक है, तभी वह हृदय परिवर्तन करा सकता है।
3. उसे पूर्णतया अनुशासित होना चाहिए।
4. उसे पूर्णतया निर्भयी होना चाहिए।
5. उसे बलिदान, कष्ट झेलने की क्षमता व विनम्र-हृदयी का होना चाहिए
6. सत्य एवं अहिंसा का पालन मनसा, वाचा, कर्मणा का अनुसरण करना चाहिए।
7. उसे अपने विश्वास और आचरण के प्रति अडिग रूप से समर्पित होना चाहिए।
8. उसके विचारों में एकरूपता होनी चाहिए। ऐसा न होने पर गलत प्रवृत्तियों के उदय होने की सम्भावना रहेगी।
9. उसे स्वार्थमूलक प्रवृत्तियों से दूर रहना चाहिए
10. उसे अपने व्यक्तित्व में अनिवार्य सद्गुणों को आत्मसात करना चाहिए
11. उसे सहिष्णु तथा सहनशक्ति होना चाहिए

गाँधीजी के अनुसार उपर्युक्त गुणों के कारण ही कोई व्यक्ति सफल सत्याग्रही बन सकता है, तभी वह आश्चर्यजनक कार्य कर सकता है। सत्याग्रही के समक्ष बड़ी से बड़ी शक्तियाँ झुक जाती है।

बी. एम. ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (एल.एन.एम.यू.)

स्नातक (प्रथमखण्ड), पेपर-I
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश

डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक 21-07-2020

अनेकान्तवाद सम्बन्धी जैन दार्शनिकों के तर्क :

अनेकान्तवाद के समर्थन में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं-

1. हमारे ~~लौकिक~~ दैनिक अनुभवों से यह सिद्ध होता है कि जगत में अनेक वस्तुएँ विद्यमान हैं।
2. विभिन्न शोधों के आधार पर जब किसी वस्तु विशेष के सन्दर्भ में नवीन तथ्यों का प्रकाशन होता है, तो इससे सिद्ध होता है कि वस्तु में अनन्त धर्म है।
3. वैचारिक विविधता की तर्कसंगत व्याख्या करने के लिए अनेकान्तवाद को मानना अनिवार्य है।
4. एक ही वस्तु तथा विभिन्न वस्तुओं का देश काल तथा परिस्थिति के अनुसार हमें भिन्न-भिन्न अनुभव होता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि वस्तुओं में अनन्त धर्म विद्यमान है।
5. जगत में नाना प्रकार के दार्शनिक सिद्धान्त प्रचलित है जो कि विभिन्न दृष्टियों पर आधारित है। इस प्रकार सत्ता सम्बन्धी जितने सिद्धान्त है, वस्तुओ के उतने प्रकार के धर्म है।
6. जगत में विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं की उपस्थिति भी द्रव्यों की विविधता को इंगित करती है।

अतः उपरोक्त तर्कों के आधार पर कहा जा सकता है कि जैनियों का अनेकान्तवाद वास्तविक सुसंगत सिद्धान्त है।